International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डॉ० हरिवंशराय बच्चन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Research Scholar - Rakesh
Supervisor - Dr. Ajay Shukla
Department of Hindi
Kalinga University Raipur, Chattisgarh
DOI:euro.ijress.33987.33980

जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब हिन्दी – साहित्येतिहास, उस जन–गण–मन का उद्‌गीथ है, जहाँ साहित्य का तात्पर्य– सत्य, शिव और सुन्दर के साथ लोक हितकारी भावना के दिव्य संस्पर्श से जुड़ा है। यद्यपि इसके सभी काल – विभाग अपने आप में विशिष्ट हैं ? किन्तु आधुनिक काल सचमुच अतिविशिष्ट है। इसकी यह अति विशिष्टता मुख्यतः दो कारणों से है– पहला इस कालखंड की समय–सीमा का अन्तिम होना और दूसरा– बदलती प्रवृत्तियों के अनुरूप अनेक अंतर्काल विभाजनों से जुड़कर, विविध काव्यान्दोलनों और नव–नवल गद्य–काव्य विधाओं का प्रतिनिधित्व करना।

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत आदि और अनेक युगों वादों और काव्यधाराओं के जीवन्त जीवन–स्पन्दन–ध्वनित कल–कल– छल–छल का प्राणवन्त साक्षी है यह आधुनिक काल । विस्मित प्रत्यक्ष–द्रष्टा के रूप में इसने साश्चर्य देखा है– चौतीस वर्ष आठ माह मात्र की अल्पायु वाले पुरुष को युग–पुरुष बनकर एक सौ पचहत्तर ग्रन्थों की रचना करते देखा है। एक भव्य व्यक्तित्व को, सरस्वती के लिए, रेलवे की नौकरी को छोड़कर 'सरस्वती' का सम्पादन करते – द्विवेदी युग बनते और देखा है– छायावाद का उपनिषद् लिखते 'प्रसाद' को प्रकृति का सुकुमार चित्र बनाते पंत को युग–पीड़ा को वीणा – स्वर देती – मीरा – महादेवी– को, प्रिय स्वतंत्र रखनव अमृत मंत्र रचते महाप्राण निरात्रा को। प्रगति की उड़ान, प्रयोग की यात्रा, नयी कविता – नवगीत का जन्म आदि वर्तमान तक के सभी दृश्य इसके दृष्टि पटल पर सुस्पष्ट अंकित है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छायावाद युग आधुनिक काल का सर्वाधिक विशिष्ट अंतर्युग है। लगभग बीस वर्षों की अवधि वाले इस काल खंड में एक ओर जहाँ ढ़ेर सारी काव्य कृतियाँ रची गयीं, वहीं दूसरी ओर साहित्य के सामाजिक उद्देश्य की व्यापक स्वीकृति के कारण सजग और संवेदनशील प्रवृत्तियों की विविधता भी रही। एक ओर – 'प्रसाद', 'निराला' आदि कवि भी इसी युग में हुए, जिनका प्रधान लक्ष्य साहित्य – साधना था और दूसरी ओर माखन लाल चतुर्वेदी, राम नरेश त्रिपाठी, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि रचनाकार भी हुए जो अपने युग के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते थे और साथ ही कविताएँ भी लिखते थे। इस वर्ग के कवियों का एक मात्र लक्ष्य काव्य–रचना नहीं था। इनकी साधना जीवन को केन्द्र बनाकर चल रही थी। ईश्वरी प्रसाद शर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', बेढ़ब बनारसी, कान्ता नाथ पाण्डेय आदि हास्य–व्यंग्य के लावण्य से रचनाधर्मिता को मनमोहक और आस्वादय बना रहे थे, तो रायकृष्ण दास, जगदम्बा प्रसाद हितैषी, अनूप शर्मा, उमाशंकर बाजपेयी आदि की कविता ब्रज भाषा के माधुर्य और हृदय के सरस अनुराग के साथ– वह नील शिखर ते उतरी, अनुरागमयी निशिबाला।

स्वागत को अवनि खड़ी लै, सुठि सांझ सुमन कै माला। प्रकृति के स्वागत – अभ्यर्थना को स्वीकार करती युग–पटल पर उतर पड़ी थी। इसी के साथ इस युग में एक और भाव – गंगा बह रही थी, जिसमें प्रेम और मस्ती का उन्मुक्त प्रवाह था, लेकिन चाहे वह सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्स्थापना की ललित कल्पना का काव्य हो या राष्ट्रीय–दर्प का ज्वलित भाव प्रवाह, चाहे वह ब्रजभाषा की मधुर रचना धर्मिता हो या प्रेम में डूबे कवियों का मस्त–मुक्त गायन। सबकी स्वतंत्र गति और पहचान के बीच कहीं कोई अंतर्विरोध नहीं। हमारे तुलनात्मक अध्ययन के प्रथम समीक्ष्य कवि डॉ० हरिवंश राय 'बच्चन' इसी प्रेम और मस्ती की मधुर – मदिर कविता के मद मस्त गायक हैं। यद्यपि इन्हें उत्तर छायावादी कवि माना जाता है, किन्तु इनकी मधु से जुड़ी 'मधुत्रयी' की तीनों रचनाएँ छायावाद – युग की ही हैं। रचनाकाल – क्रम की दृष्टि से 'मधुशाला' 1933–34 में प्रकाशित हुई थी तो 'मधुबाला' और 'मधुकलश' 1936 में । 'निशा निमंत्रण' 1938 ई० तक इनकी रचना – कल्पना स्वप्न– लोक की उद्दाम उड़ान पर थी। यह अलग बात है कि जितनी लोकप्रियता और मंचीय प्रतिष्ठा उन्हें मधुत्रयी विशेषकर 'मधुशाला' और 'मधुबाला' से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मिलो, उतनी अन्य रचनाओं से नहीं। 'मधुशाला' श्बच्चन की रचनाधर्मिता से उपजा ऐसा ग्रंथ–कमल है, जिसकी मुखर – मादक सुरभि देश के कोने–कोने में फैल गयी। इसकी इस मोहक व्यापकता पर स्वयं बच्चन भी अभिभूत हुए हैं। अपनी आत्मकथा के प्रथम खंड 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ में उनकी साश्चर्य विवश स्वीकृति 'यह दखकर मुझे आश्चर्य होता था कि मेरी कविता में ऐसा क्या है, विशेषकर मधुशाला में, मधुकलश में जो कलकत्ता से लेकर लाहौर तक एक ही उल्लास से सुना जाता है। रचनाओं की लोकप्रियता से उपजा वह आनन्द है जिसे पाने के लिए कवि कवि होता है। और जिसे पाकर कवि धन्य होता है।

किसी भी साहित्य – धारा या साहित्यकार को समझने के लिए उसके युग का अध्ययन अनिवार्य होता है। युग की विषमताएँ और आकांक्षाएँ साहित्यकार के माध्यम से उसके काव्य को स्वरूप तथा आधार प्रदान करती हैं। साहित्यकार ही नहीं, चिंतक और विचारक भी अपने युग की सीमाओं के भीतर ही कार्यशील होते हैं, क्योंकि उनमें युग की चेतना ही पुंजीभूत और साकार हो उठती है। कोई रचनाकार अपनी प्राचीन संस्कृति के जीवन्त जीवन–मूल्यों का अन्वेषण कर उनका नये युग के निर्माण में प्रयोग करता है, तो कोई किसी विदेशी भावधारा से प्रभावित होकर नये युग– स्वप्न को अभिनव कल्पना से तराशता है। 'बच्चन' जी की रचनाधर्मिता और उनके जीवन को समझने के लिए उनके युग का अध्ययन हमारे लिए अति आवश्यक है, क्योंकि किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व और उसकी रचनाधर्मिता पर उसके युग की अमिट छाप होती है।

बच्चन का युग–छायावादी युग अपने जन्म से लेकर परिसमाप्ति तक अनेक परिवर्तनों का प्रत्यक्ष द्रष्टा व भोगता रहा है। इस काव्य– धारा की पलकें खुलीं तो राजनैतिक छितिज पर प्रथम विश्वयुद्ध जैसी घटना घट चुकी थी। स्वतंत्रता का आन्दोलन नयी करवट ले रहा था। अतः अब तक के स्थूल प्रयत्न सूक्ष्मता की ओर बढ़ने लगे थे। इस सूक्ष्मता को अधिकाधिक मनोहारी एवं व्यक्तित्व – विकास का साधन बनाने में गाँधी जी की सत्य, अहिंसा और असहयोग की सूक्ष्म शक्तियों का प्रयोग होने लगा था। यह प्रयत्न कुछ समय तक लड़खड़ाते कदमों से चला, किंतु अनुकूल पर्यावरण पाकर इन शक्तियों का विकास हुआ। निराशा और हताशा की सीमाएँ टूटने लगीं और जनमानस आन्तरिक यात्रा पर चल पड़ा। फलतः छायावाद में एक सीमा तक निराशा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का स्वर भी सुना जा सकता है, किन्तु यह निराशा सर्वत्र नहीं थी। इसके मूत्र में वैयक्तिक और आशा के मार्ग में पड़ने वाली वे बाधाएँ थी जो गाँधी के सिद्धान्तों के मार्ग में दीवार बनकर आयी थीं।

गाँधी जी द्वारा चलाया गया राष्ट्रीय चेतना आन्दोलन जब व्यापक और गहरा हुआ तो सत्याग्रह के मंत्र ने उसमें अतिरिक्त शक्ति भरने का कार्य किया। एक ओर तो यह सब हो रहा था और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार की स्वार्थी नीतियाँ नये–नये रूपों में सामने आती जा रही थीं। ये स्वार्थी नीतियाँ ही जब दमन और शोषण की पराकाष्ठा को पहुँची तो देश का माहौल परिवर्तन और स्वच्छन्द राहों की खोज करने लगा। स्थिति बदलती गयी, दृष्टि धुलती गयी और उसमें नये भावो का रंग चमकने लगा। जो भी छायावादी स्वच्छन्दता का समर्थक बनकर आया था, वह रागात्मक संवेदन और मानवीय स्वातंत्य की पुकार तो लगाता रहा, किन्तु राजनैतिक आन्दोलनों के प्रति उदासीन ही रहा। इस उदासीनता के मूल में इन कवियों की वैयक्तिकता की भावना रही है। सबसे बड़ा आश्चर्य तो तब होता है जब छायावादी चेतना क कवि अपने ही आस–पास घटित जलियावाला काण्ड, भगत सिंह की फाँसी, साइमन कमीशन बहिष्कार, नमक कानून भंग जैसी घटनाओं के प्रति एक भी पंक्ति नहीं लिख पाये। इसके और जो भी कारण रहे हों, इतना निश्चित है कि छायावादियों की राग–भावना और कल्पना ने उन्हें इस राजनैतिक दृश्य के प्रति सतर्क नहीं होने दिया।

सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों की और ध्यान दें तो एक बात साफ नजर आती है कि उस समय सामन्तशाही व्यवस्था का अंत हो गया था और अंग्रेजों के सम्पर्क के कारण भारत में नयी पूँजीवादी व्यवस्था विकसित हो गयी थी। पूंजीवाद विकसित हुआ तो व्यक्ति स्वातंब्य की धारणा भी बलवती हुई। इसी बलवती धारणा को वैयक्तिकता के रूप में छायावाद में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। यह वैयक्तिकता द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया नहीं है। इसमे तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न व्यक्ति स्वातंत्र्य – भावना की काव्यपरक अभिव्यंजना भी शामिल है। नवीन शिक्षा पद्धति ने भी छायावाद को प्रेरित एवं पोषित किया। नयी शिक्षा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का विस्तृत क्षेत्र लेकर आयी थी, जिससे शिक्षित युवकों में प्राचीन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

एवं परम्परागत मान्यताओं के प्रति अविश्वास का भाव गहरा हुआ। निश्चय ही नयी पीढ़ी वालटेयर और शेले जैसे विचारकों से जुड़ती गयी और इसी जुड़ने में वह स्वतंत्रता का स्वप्न देखने लगी।

उसके स्वप्नों, इच्छाओं और मनोभावों ने नयी अभिव्यंजना का पथ खोजना प्रारभ कर दिया। यही कारण है कि इस युग के कवियों ने अंग्रेजी रोमान्टिक काव्य में व्यक्त भावों को अपनी स्नेहिल दृष्टि प्रदान की, किन्तु उनका प्रत्यक्ष जीवन इससे सामंजस्य नहीं बिठा पा रहा था। अंग्रेजों के शासनकाल में अभिव्यक्ति की यह स्वतंत्रता काई मार्ग नहीं खोज पा रही थी। इस असमर्थता और अक्षमता का कारण थीं देश की राजनैतिक परिस्थितियाँ के अंग्रेजों का दमन चक्र घूम रहा था – बिना रुके और बिना किसी बाधा। ऐसी स्थिति में मन में अंकुरित आजादी और स्वतंत्र व्यक्तित्व के भाव साकार होते नहीं दिखते थे। स्पष्ट ही एक ओर तो वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना प्रबल थी और दूसरी ओर शासन का प्रबल पाश जीवन के विविध पहलुओं को जकड़े हुए था । इसी अन्तर्विरोध का मनोवैज्ञानिक परिणाम कुंठा, घुटन, निराशा और मानसिक क्षोभ बनकर सामने आया । कवि–कलाकारों का संवेदना – पूर्ण मानस क्रमशः पलायनवादी, अन्तर्मुखी और निराशा से युक्त विजड़ित होता गया। इतना ही नहीं अभिव्यक्ति भी लाक्षणिक प्रतीकात्मक और अस्पष्ट होती गयी। वस्तुतः स्वच्छन्दता और व्यक्ति – स्वातंत्रय की भूख जब प्रत्यक्ष जीवन में शान्त, सार्थक और सफल नहीं हो पायी तो उसने काव्य–जगत् में प्रवेश किया। परिणामस्वरूप विषय शेली और भाषा आदि के विरुद्ध तीव्र विद्रोह फूट पड़ा। यही वह अंतर्विरोध है जो छायावाद में दु:ख और निराशा के स्वरों में अभिव्यक्त हुआ है और इसी का दूसरा छोर प्रकृति– प्रेम, स्वतंत्रता और देश भक्ति तथा प्रेम और मस्ती की अभिव्यंजना की ओर अग्रसर हुआ है।

सांस्कृतिक दृष्टि से यह काल बीसवीं सदी के दो दशकों की भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना और पुनरुत्थान की काव्यात्मक परिणति है। इसमें जो स्वच्छन्दतावादी विद्रोह अभिव्यक्त हुआ है, वह पर्याप्त महत्व रखता है। विद्रोह की इस चेतना के वाहक व्यक्तित्व– गाँधी के दर्शन का भी विशेष महत्व है। विद्रोह की जो भावना इस युग में मिलती है वह पर्याप्त संयमित और अनुशासित है। इस युग का एक पक्ष दर्शन से भी जुड़ा है। इस दार्शनिकीकरण और मानवीयता के मूल में देश की राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक नैतिकता को स्पष्ट देखा जा सकता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है। धर्म और दर्शन के क्षेत्र में इस युग में, स्वामी दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर और अरविन्द जैसे महान दार्शनिकों ने संकीर्ण हिन्दुत्व का विरोध करके व्यापक धरातल पर विश्व मानवतावाद या विश्व धर्म को प्रतिष्ठा की। राष्ट्रीयता और विश्व मानवतावाद की धारणा का मंत्र इस युग के रचनाधर्मियों को खूब रास आया और 'विजयिनी मानवता हो जाय का दिव्य गान प्रस्फुटित हुआ। इस तरह धर्म के साथ–साथ दर्शन की पीठिका पर यह युग अद्वैत व सर्वात्मवाद का ऋणी है।

साहित्यिक विरासत के रूप में इस युग को भारतेन्दु और द्विवेदी युगीन संदर्भ और मूल्य तो प्राप्त हुए ही, रीतियुगीन निष्क्रिता व जड़ता का वातावरण भी प्राप्त हुआ। भारतेन्दु सामाजिक चेतना का अलख जगाते हुए एक मायने में रीतिकालीन श्रृंगार व अभिव्यंजना की भाषायी शक्तियों से जुड़े रहे। यही कारण है कि भक्ति, श्रृंगार और राष्ट्रीय चेतना की त्रिवेणी में स्नात होकर जब द्विवेदी युग का आविर्भाव हुआ तो उसने रीतिकालीन चेतना का तीव्र विरोध किया। यह वह काव्य–धारा थी जो ठोस यथार्थ, नैतिकता एवं शील के प्रति अधिक आयग्रही थी। विषय तो बदले ही, काव्य की भाषा भी ब्रज की घनी अमराइयों से निकलकर खड़ी बोली के परिष्कृत पथ पर आ गयी। सदाचार, शील और मर्यादा की सीमाओं में आबद्ध द्विवेदीयुगीन काव्य बन्धनों की अधिकता के कारण नीरस और शुष्क हो गया और इसीलिए भाषा का पूर्ण विकसित पथ पाकर भी इस यग के कवि खड़ी बोली की अंतर्प्रातिम शक्तियों का पूर्ण लाभ न उठा पाये। इतना ही नहीं प्रेम, काम और नारी सौन्दर्य से आबद्ध भावनाएँ उत्तरोत्तर दमित होती गयी। यह तो नहीं कहा जा सकता कि नर और नारी के बीच सहज आकर्षण के तार द्विवेदीयुगीन मर्यादावादी धारणाओं के बोझ से टूट गये थे, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनकी इश्यता लुप्तप्राय हो गयी थी । यही कारण है कि इस युग में चित्रित नारियाँ या तो सती साध्वी हैं या फिर वीर क्षेत्राणियाँ। उनका कामिनीरूप और उनके एकान्त कक्ष की मधुर वार्ता कविता में नहीं आ पायी है। कुल मिलाकर इस युग में कविता रसिक समुदाय के उपयोग की कला नहीं रह गयी थी।

छायावादी युग के रचनाकारों ने इस स्थिति को जाना–पहचाना और समझा। उन्होंने काव्य रसिकों को पुनः लौटाकर कला का श्रृगार किया। प्रतिक्रिया का दौर तीव्र होने के साथ–साथ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

श्रृगारिकता के स्थूल तथा सूक्ष्म– दोनों रूप अपनी रमणीय सौम्यता के साथ स्वीकृति को प्राप्त हुए। प्रेमानुभूतियों की व्यंजना का मार्ग खुला और उसे न केवल छायावादियों ने प्रशस्त किया, अपितु राष्ट्रीय भावना के कवियों ने भी प्रणय और मस्ती के रंगों से कविता को आनंद का पर्यायत्व प्रदान किया। व्यापक धरातल पर देखें तो यह युग भारत के लिए अस्मिता की खोज का युग था। 'यहीं खोज युगीनकाव्य में अनेक मुखी हो गयी है। वस्तुतः इस युग के कवियों ने द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध सूक्ष्म भावनाओं की प्रतिष्ठा की तत्कालीन रूढियों और ईसाई धर्म प्रचारकों के आक्षेपों के विरुद्ध अतीत भारत के प्राणवान् मूल्यों की प्रतिष्ठा की, आर्थिक और राजनैतिक दासता के विरुद्ध स्वाधीनता – केवल राष्ट्रीय ही नहीं मानव मात्र की स्वाधीनता के मूल्य की प्रतिष्ठा की।

इतिहास की दृष्टि से देखने पर 'बच्चन' के काव्य जगत् में अवतरण का काल वह समय है जब अंग्रेजों का अत्याचार अपने चरम पर पहुँचा हुआ था। भारतीय जनमानस अकाल–दुकाल झेलते और लगातार पद दलित, शोषित और उत्पीड़ित होते–होते तिलक, गाँधी, जवाहर जैसे नायकों का बल पाकर सहिष्णु–विद्रोही की मुद्रा में ठहर सा गया। उद्योग–व्यापार, शासन सत्ता, सब पर अंग्रेज ही काबिज रहें यह उसे अब कतई सहन नहीं था। साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदी जी के कड़े प्रतिबन्ध से अंतस् का सत्य विविध जटिल परतंत्रताओं में जकड़ गया था। जबकि सब कुछ निसर्गतः स्वतंत्र था, हमारा था – तब हम परतंत्र क्यों रहते? की क्रान्तिकारी सोच लिये समूचा देश विद्राह – आन्दोलन की राह पर चल पड़ा। उपन्यास समाट प्रेम चन्द्र जी की सजग दृष्टि ने इन्हीं पीड़ा – संघषा को आलोकित करते 'कर्मभूमि' नामक उपन्यास की रचना करके इस युग के घटनाक्रम को इतिहास – आँखों देखे इतिहास की तरह लिपिबद्ध कर दिया था। स्वाधीनता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष तो सब जी रहे थे लेकिन थकान सब पर भारी थी। और तो और राष्ट्रवादी कविता भी थकान के विरुद्ध – बालकृष्ण शमा 'नवीन' के शब्दों में– हो जाने दे गर्क नशे में मत पड़ने दे फर्क नशे में। ज्ञानध्यान पूजा पाथी के फट जाने दे वर्क नशे में। साकी अब कैसा विलम्ब भर–भर ला तन्मयता हाला। मस्ती और नशे की माँग करने लगी थी।युग की इसी दुर्दम आकांक्षा का परिणाम था – मस्ती के सरल तरल मधुमत्त गायक 'बच्चन'

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का जन्म।

'मानव मूर्त और अमूर्त विज्ञान का समन्वय है' और कवि, कवि होने के पूर्व तथा बाद में भी मानव ही है। इसीलिए व्यक्तित्व और सृजन–प्रक्रिया की विवेचना काव्य के मूल्यांकन में सहायक है। यूरोप के विद्वान सेन्ट बफ ने स्पष्ट लिखा है कि आलोचक का पहला कर्तव्य है कि वह लेखक के जीवन चरित का वैज्ञानिक अध्ययन करे। वह उसके व्यक्तित्व के विषय में विविध सोतो से जानकारी प्राप्त करे। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व आखिर है क्या? मात्र जीवन वृत्त को (यद्यपि यह व्यक्तित्व का एक आधारभूत अंग है) तो व्यक्तित्व कहा नहीं जा सकता। तब क्या कवि का रचना संसार (जिसमें उसका व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है) ही व्यक्तित्व है? निश्चय ही व्यक्तित्व की अवधारणा इन दोनों सम्भावनाओं से भिन्न है। जहाँ तक मैं समझती हूँ व्यक्तित्व का अभिप्राय है– व्यक्ति द्वारा व्यक्ति होने से लेकर अब तक की समस्त उपार्जित उपलब्धियों का समाहार। अर्थात् व्यक्ति अपने आदिम स्रोत से लेकर अब तक की जीवन–यात्रा में जो कुछ परम्परा से या स्वयं के पुरुषार्थ से प्राप्त करता है, सबका समेकित रूप व्यक्तित्व है । व्यक्तित्व के अन्तर्विरोधों का सुलझा रूप संतुलित आदर्श व्यक्तित्व भले कहा जाता हो, किन्तु इस दुनिया की दुविधा, उलझन और विकलता भी तो व्यक्तित्व के अंग हैं और कवि के ये भोगे हुए यथार्थ यदि उसकी कविता में नहीं उतरे तो वह पलायनवादी ही तो कहा जायेगा। इस तरह जीवन–वृत्त और परिस्थिति जन्य अतः वृत्तियाँ दोनों के आलोक में ही कवि के व्यक्तित्व को भली–भाँति समझा जा सकता है।

जीवन वृत्त की दृष्टि से देखने पर हम पाते हैं कि कवि हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म 27 नवम्बर, 1907 को गंगा–यमुना– सरस्वती के संगम स्थल तीर्थराज प्रयाग के प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पूर्वज अमोढ़ा, बस्ती से निर्गमित होकर प्रतापगढ़ होते हुए इलाहाबाद में स्थापित हुए थे। इनके पिता श्री प्रताप नारायण पायनियर प्रेस में क्लर्क थे। माता श्रीमती सुरसती (सरस्वती) देवी धर्म परायणा, संस्कार – भीरू और सहज – वात्सल्यमयी कुशल गृहिणी थी। इनकी माँ विवाह के बाद लम्बे समय तक माँ नहीं बन पायी। दो बच्चों का जन्म हुआ भी, पर वे शैशवावस्था में ही काल कवलित हो गये। उसके बाद एक बच्ची का जन्म हुआ, जिसका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नाम भगवान देई रखा गया। इसके बाद दो लड़कों का जन्म हुआ। वे भी अल्पायु में ही चल बसे। दीर्घजीवी संतान की प्राप्ति के लिए पं० रामचरण शुक्ल ने प्रताप नारायण जी को सुझाव दिया कि जब सुरसती देवी गर्भवती हों तब वे दोनों हरिवंश पुराण सुने। हरिवंश पुराण श्रवण की फलश्रुति में जन्म होने के कारण बालक का नाम हरिवंश रखा गया। स्नेह का पुकार नाम 'बच्चन' था। इस प्रकार आगे चलकर इनका नाम हरिवंश राय बच्चन हो गया। इस प्रकार जन्म के समय बच्चन जी अपने माता– पिता की छठी संतान थे और जीवित संतानों में दूसरे क्रम पर थे। इनकी बहन इनसे सात वर्ष बड़ी थी।

बच्चन जी का लालन–पालन बड़े ही प्यार–दुलार के साथ हुआ। मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण यह स्वभावतः उत्पाती और शरारती होते हुए भी माता–पिता की प्रिय संतान थे। इनके जन्म के तीन वर्ष बाद एक और लड़के का जन्म हुआ जिसका नाम शालिग्राम रखा गया। उसे प्यार से 'रज्जन' कहा जाता था। इसके तीन साल बाद अन्तिम सन्तान शैलकुमारी का जन्म हुआ । इस प्रकार बच्चन जी कुल चार भाई–बहन थे। बच्चन जी की प्राथमिक शिक्षा ऊँचा मण्डी पाठशाला में हुई। 1919 ई० में इनका प्रवेश छठीं कक्षा में कायस्थ पाठशाला में कराया गया। इसी विद्यालय में इनके पिता प्रताप नारायण जी भी पढ़े थे। इसीलिए बच्चन जी को इस विद्यालय से विशेष अनुराग था। 1919–1925 तक ये कायस्थ पाठशाला में अध्ययनरत रहे। 1925 में हाईस्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करके इन्होंने गर्वनमेन्ट इण्टर कालेज में इण्टरमीडिएट के प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया।

1926 में हरिवंश राय 'बच्चन' का विवाह श्यामा के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह के समय 'बच्चन' जी की उम्र 19 वर्ष व श्यामा की उम्र लगभग 15 वर्ष थी। श्यामा जी सीधी व सरल स्वभाव की थीं और वे बच्चन जी के लिए उनके हर सुख–दुख में अनन्य सहचरी ही नहीं, प्रणय की अंतरंग अनुभूतियों के स्तर पर भी आनन्दोन्मादभरी जीवन संगिनी सिद्ध हुई।

विवाह के बाद भी बच्चन ने अपना अध्ययन जारी रखा। 1927 में इण्टरमीडिएट परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी, अंग्रेजी साहित्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और दर्शन शास्त्र के साथ बी०ए० में प्रवेश लिया। 1929 में बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में तृतीय स्थान के साथ उत्तीर्ण की और 1930 में एम०ए० प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की। युवा मन की उत्तेजना और राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में आपने एम०ए० द्वितीय वर्ष की परीक्षा नहीं दी और विश्वविद्यालय छोड़ दिया। पारिवारिक परिस्थितियों में अर्थाभाव के कारण इन्हे दैनिक पायनियर की भी सेवा करनी पड़ी। 1934 में आपने अग्रवाल कॉलेज इलाहाबाद में 35 रूपये प्रतिमाह के वेतन पर अध्यापन किया। आदर्श पेशा होने के कारण बच्चन के परिवार के लोग इस नौकरी से प्रसन्न थे।

इन्हीं दिनों बच्चन को नियति के अभिशाप भी भोगने पड़े। आपके छोटे भाई की पुत्री का देहावसान् हुआ और पत्नी की अस्वस्थता के साथ–साथ आप स्वयं भी क्षय ग्रस्त हो गये। प्रबल आत्मबल के धनी आपने स्वयं को तो प्राकृतिक चिकित्सा से स्वस्थ कर लिया किन्तु अर्थाभाव में पत्नी की समुचित चिकित्सा न करा सके तथा आपकी तन्मय परिचर्या के बावजूद 7 नवम्बर, 1936 को श्यामा देवी का देहावसान हो गया। 1934 से 36 के बीच आपकी प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' के दो संस्करण निकल चुके थे। आपकी 'मधुबाला' और 'मधुकलश' रचनाएँ भी इसी बीच प्रकाशित हुई थी। 'मधुकलश' की अधिकांश कविताएँ श्यामा देवी की मरणान्तक अस्वस्थता के अंतिम क्षणों में लिखी गयी थीं।

पत्नी के असामयिक निधन ने बच्चन को निराशा और दुःख से भर दिया और दुःख को भुलाने की लाख कोशिशों के बावजूद इनका लेखन पूर्णतः मौन हो गया । आखिरकार जीवन के इस नीरव एकान्त में आपने अपना ध्यान अध्ययन में केन्द्रित किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1937 में आपने पुनः एम०ए० (अंग्रेजी साहित्य) किया और वाराणसी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी०टी० के लिए नामांकित हुए। इस बोच आप सहजता की ओर बढ़ रहे थे और पत्नी की मृत्यु के 370 दिनों बाद निशा निमंत्रण की प्रथम कविता दिन जल्दी–जल्दी ढलता है 19 की रचना वाराणसी से लौटते समय अखबार के पन्नों पर की थी।

1941 में प्रो० श्रीयुत अमरनाथ झा के आमंत्रण पर आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अंग्रेजी विभाग में अस्थायी प्रवक्ता पद पर अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। 1942 में रावलपिण्डी मूल के पटियाला रियासत में रैवेन्यू मिनिस्टर पद से सेवानिवृत्त होकर लाहौर में बसे सरदार खजान सिंह सूरी की चौथी (सबसे छोटी) पुत्री तेजी से आपका पुनर्विवाह हुआ जो 1942 में अमित तथा 1947 में अजित नामक दो पुत्रों की माँ बनो। तेजी जी स्वयं भी लाहौर के कॉलेज में स्थायी पद पर अध्यापिका थी किंतु बच्चन जी से विवाह के बाद वे पद त्याग करके उनके साथ इलाहाबाद में ही रहने लगी।

सेवा स्थायी होने के बाद बच्चन ने 1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही कार्य किया। 1952 से 1954 तक आपने इंग्लैंड में प्रवासी के रूप में रहकर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान टाम राइस हेन के कुशल निर्देशन में कवि ईट्स के काव्य पर उत्कृष्ट शोध–प्रबंध लिखकर पी–एच०डी० की उपाधि प्राप्त की और इस संदर्भ में यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि पत्नी तेजी बच्चन के धैर्य, सहयोग व भौतिक सुख–सुविधाओं के त्याग के फलस्वरूप ही बच्चन जी अपने लक्ष्य में सफल हुए। ईट्स ने ईसाइयत की अवहेलना की थी। बच्चन जी ने भी अत्यन्त साहस के साथ अपने प्रिय कवि के पथ का अनुकरण करते हुए पी–एच०डी० की डिग्री गैर ईसाई पद्धति से ली जिसमें शपथ सिर्फ परमात्मा के नाम पर ली जाती थी।

कैम्ब्रिज डॉक्टरेट अकादमी दुनिया में एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है । अतः उन्हें जापान, हांगकांग, नैरोबी, अफ्रीका आदि में अच्छी सेवा–स्थितियाँ मिल सकती थीं। लेकिन बच्चन ने कहा हिन्दी का छोटा–मोटा लेखक होने के नाते भी अपने भाषा क्षेत्र से दूर जाना मेरे लिए हितकर न होगा, फिर मेरे बच्चे ऐसी अवस्था में हैं जिसमें मैं चाहूँगा कि वे देश के संस्कारों में पले–बढ़ें।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी–एच०डी० की डिग्री लेकर लौटने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग से (विभागीय ईर्ष्या के कारण) अपेक्षित आत्मीय व्यवहार न मिलने पर 1955 में इलाहाबाद रेडियो स्टेशन पर हिन्दी प्रोड्यूसर के रूप में कार्यभार सँभाला। फिर तीन महीने के बाद विदेश मंत्रालय में आफीसर आन स्पेशल ड्यूटी (हिन्दी) के पद पर 21

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दिसम्बर, 1955 को आसीन हो हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में राजनयिक कामकाज में हिन्दी को सशक्त माध्यम के रूप में सम्बद्ध करने हेतु प्रयासरत रहे और यहीं काय करते हुए सेवानिवृत्त भी हुए।

विदेश मंत्रालय की सेवा के बाद वे छह वर्ष तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य के रूप में कार्यरत रहे। 1972 से 1980 तक दिल्ली, बम्बई में रहने के बाद आपने स्थायी रूप से दिल्ली में गुलमोहर पार्क में स्थित 'सोपान' में जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत किये। आजीवन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत, 22 कर्मक्षेत्र में साहित्य की चिरन्तन साधना करते हुए आपकी पंचभूत सत्ता शनिवार 8 जनवरी, 2003 ई० को पंचतत्व में विलीन हो गयी।

व्यक्तित्व विस्तार में बच्चन जी 'हालावाद' के प्रवर्तक हैं। हिन्दी गीति– धारा के सशक्त हस्ताक्षर और अपनी मनोहारी कविता के साथ–साथ मुग्ध कर देने वाले अप्रतिम मधुर स्वर से श्रोताओं को सम्मोहित करने में समर्थ, रचना की दृष्टि से विविध साहित्यिक विधाओं के विराट को अपने सुकुमार सर्जन से छूकर अलंकृत करते हरिवंश राय बच्चन जी का व्यक्ति भी उनके कवि जैसा ही है ऐसी बात नहीं। बच्चन के समसामयिक – उन्हें देखने और उनके साथ–साथ रहने वाले जानते हैं कि वह मझोले कद का एक दुबला सा नव युवक है, कुछ अपने में खोया सा, नाप–तौल कर बात करने वाला चेहरा इसे कुल मिलाकर साधारण प्रभाव ही तो कहा जायेगा। लेकिन इसी व्यक्ति पर मुग्ध मधुशाला के सर्वप्रथम श्रोता श्री प्रफुल्ल चन्द ओझा मुक्त व्यक्ति बच्चन की चर्चा के बिना उनकी साहित्यिक चर्चा को ही असमीचीन और अनुचित मानते हुए कहते हैं– जैसे जीवन के लिए, वैसे ही साहित्य के लिए भी सत्य और संयम पहली शर्तें हैं। मैं मानता हूँ कि जीवन के ऊबड़–खाबड़ मार्ग पर चलते हुए बच्चन ने इन शर्तों का तत्परतापूर्वक पालन किया है। मैं यह भी मानता हूँ कि व्यक्ति के व्यक्तित्व और चरित्र का निषेध करके उसके साहित्य की समीचीन चर्चा नहीं हो सकती, इसीलिए पहले व्यक्ति बच्चन के सम्बन्ध में दो शब्द–

हरिवंश राय के नाम से बच्चन को पहली बार मैंने तब देखा जाना जब वे प्रयाग विश्वविद्यालय के एम०ए० अंग्रेजी प्रथम वर्ष के छात्र थे और उन्होंने विश्वविद्यालय की साहित्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिषद् द्वारा आयोजित कहानी प्रतियागिता में भाग लिया था। प्रयाग कुछ ऐसा ही अनुभव है बच्चन जी के समकालिक सुप्रसिद्ध साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा का। वे कहते हैं– बच्चन को प्रथम बार मैंने देखा एक कहानीकार के रूप में। सन् 1932–33 की बात है विश्वविद्यालय में कहानी प्रतियोगिता हुई थी और बच्चन ने वहाँ अपनी एक कहानी को प्रस्तुत किया था। उस समय तक मैंने कहानियाँ लिखना भी प्रारंभ कर दिया था और उस कहानी प्रतियोगिता में मैं भी एक निर्णायक था। बच्चन की वह कहानी मुझे पसन्द आयी थी– जहाँ तक मेरा ख्याल है बच्चन को उस कहानी पर प्रथम पुरस्कार मिला था। 25 यह घटना बच्चन के साहित्य में प्रवेश का शुभ मुहूर्त थी। प्रतिष्ठित कहानीकार के रूप में स्थापना का यह भावी संकेत देखकर आज कौन कह सकता है कि मधुशाला का मतवाला गायक यह बच्चन वही कहानी – प्रतियोगिता वाला हरिवंशराय बच्चन है।

मधुशाला के प्रथम श्रोता 'मुक्त' जी जो उनके समकालिक ही नहीं आत्मीय मित्र भी रहे हैं, बच्चन के व्यक्तित्व को उनके अभाव ग्रस्त किन्तु समभाव की ओर गति करते जीवन–संघर्ष और उनकी रचनाधर्मिता को काफी निकट से जानते हैं । व्यक्ति बच्चन के जीवन के ऐसे ही अंतरंग मार्मिक क्षणों के कुछ शब्द – चित्र उन्हीं के शब्दों में निम्नवत् है–

बकारी के अभाव में मस्ती का आलम

''कहानी प्रतियोगिता का यह परिचय शीघ्र ही बहुत घनिष्ठ हो चुका और हम दोनों सग भाइयों से भी निकट बन गये। सत्याग्रह आन्दोलन की तीव्र धारा में एम०ए० की पढ़ाई पूरी होने से पहले ही बच्चन विश्वविद्यालय से नाता तोड़ चुके थे। बेकारी के दिन ट्यूशन और मटरगस्तियों में बीत रहे थे– लेकिन बच्चन थे कि जिन्दगी से या परिस्थितियों से उन्हें कोई गिला शिकवा नहीं था। वे डटकर मेहनत करते, जुटकर यार बाशी करते और अभाव तथा तंगी के दिन भी गहरी मस्ती के आलम में गुजरते जाते।''

अधीर – सुबोध जिज्ञासु बच्चन

यों पुस्तकों के वे प्रचण्ड प्रेमी थे, साहित्यिकों से मिलना–जुलना होता था, साहित्य पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जमकर चर्चाएँ भी होती थीं, लेकिन यह सब एक अधीर और सुबोध जिजासु के स्तर पर ही होता था, अधिकारी विद्वान या सुप्रतिष्ठित साहित्यिक के स्तर पर नहीं।

कविरूप छिपाते संकोची बच्चन

घटना प्रसंग से एक बार बच्चन की अनुपस्थिति में मुझे उनकी निजी संदूक खोलनी पड़ी थी। संदूक में तीन बड़ी सुन्दर कापियाँ सहेजकर रखी हुई थीं और उनमें वैसे हो सुंदर और पुष्ट अक्षरों में बहत सारी कविताएँ लिखी हुई थीं। स्वाभाविक कौतूहल से मैंने उन कविताओं को उलट–पलट कर देखा। कविताएँ मुझे खासी अच्छी लगीं। पहली और स्वाभाविक प्रतिक्रिया मेरी यही हुई कि साहित्य और कला के प्रति गहरा अनुराग रखने वाले बच्चन ने पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित उन कविताओं की प्रतिलिपि कर रखी है, जो उनके मन को छू गयी हैं। लेकिन भाभी (स्व० श्यामा देवी) से पूछकर यह जानने के बाद मेरे आश्चर्य और आनन्द की सीमा न रही कि वे बच्चन की रचनाएँ है और अद्यावधि अप्रकाशित तथा अज्ञात हैं। मैंने बच्चन और भाभी की जानकारी के बगैर उनमें से तीन–चार कविताओं की प्रतिलिपि कर ली और उन्हें चुपचाप पत्र पत्रिकाओं मैं प्रकाशनार्थ भेज दिया। सौभाग्य से प्रकाशित भी हुईं।

मैं कवि सम्मेलनों में जाता तो श्रोता के रूप में बच्चन भी मेरे साथ जाया करते। मैं मंच पर ही बैठे किसी बड़े–बुजुर्ग से चुपचाप कह देता कि बच्चन बहुत अच्छी कविताएँ लिखते हैं और पढ़ते भी उतना ही अच्छा हैं। बड़े आदेश देते, बच्चन लाल–पीले होते मगर कविता उन्हें पढ़नी ही पड़ती। इस तरह प्रयाग में वे शीघ्र ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो गये और बड़ी तेजी से यह दायरा बढ़ता ही गया।

गृहस्थ और कवि रूप के बीच सहज प्रसन्न हँसमुख बच्चन

बच्चन एक दिन तन्मयता से मधुशाला के छन्द लिख रहे थे। मैं सदा की तरह पास ही बैठा था। घर – गिरिस्ती की कोई आवश्यक बात कहने के लिए भाभी जी अचानक कुर्सी के पीछे खड़ी हो गयीं। उन्होंने झुककर धीमे से कुछ कहा ही था कि बच्चन जी बिगड़ उठे – ''देखो जी! मैंने तुमसे कह दिया है कि जब मैं लिखता रहूँ, तुम बोला मत करो।'' भाभी जी ने भी अपने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वाभाविक शान्त संयत स्वर में उत्तर दिया– ''देखोजी ! मैंने भी तुमसे कह दिया है, जब मैं बोला करूँ तुम लिखा मत करो। हम सभी हँस पड़े। बच्चन का गुस्सा काफूर हो गया।

बच्चन का जीवन जटिल संघर्षों का जीवन है

कहीं आर्थिक तंगी के विरूद्ध संघर्ष तो कहीं नियति के कुचक्र के विरूद्ध संघर्ष। लेकिन बच्चन हैं कि टूटना – झुकना या हारना तो जैसे जानते ही नहीं। अतीत की चोट और भविष्यत् के मधुर स्वप्न उन्हें बाँध नहीं पाते। इसीलिए चाहे अच्छा हो या बुरा अपने वर्तमान को वे पूरी सिद्दत और आत्मीयता के साथ जीते हैं। प्रस्तुत है उनके संघर्षित किन्तु अपराजित आहलादपूर्ण जीवन क्षणों के कुछ भव्य शब्द–चित्र– श्यामा के आत्मीय प्रणय की अलौकिक अनभूति में डूबे बच्चन – श्यामा भोली नन्हीं नादान, अनजान, हँसमुख, किसी ऐसे मधुवन की टकटकी, गुलाब की कली – नवल कलिका थी वह जिसमें न कभी पतझड़ आया हो और न जिसने काटों की निकटता जानी हो। श्यामा मुझे कीट्स की नाइटैंगेल लगी थीं। ड्राई ऐण्ड आफर द ट्रीज की वृक्ष परी तो कभी मुझे 'शेली' की स्काईलार्क लगीं। वह हवलाक की 'ऐन अनबडीज ज्याँय हू रेस जस्ट विगन– एक अमूर्त आनन्द जिसका अभियान अभी आरंभ ही हुआ है। अर्थात् जिसने अभी जीवन की यात्रा की कठिनाई को जाना ही नहीं। मैं अपने लड़कपन को याद करता हूँ तो आंतरिक अभावों अथवा बाह्य वर्जनाओं का संत्रास झेलने की स्मृति मुझमें नहीं जागती। दमन शायद मैंने एकमात्र खेल भावना का किया था। खुलकर न खेलने का परिणाम मैं आज भी भोग रहा हूँ मैंने जीवन को बहुत गंभीर बना लिया है जो मैं समझता हूँ अस्वस्थ है और जिसने मझे बहुत थकाया है।

बड़े होकर मैंने सोने की इच्छा का दमन किया। शारीरिक आवश्यकता सुलाती तो है पर सुख से सोने का अनुभव मैंने आज तक नहीं किया है। सोना मुझे बेकार का समय गंवाना लगता है।

''गंसी चाचा ने फूल पौधों के प्रति इतना आतंक मेरे बाल मन में भर दिया था कि उनके प्रति सहज अनुराग कभी मुझमें जाग ही न सका'' कुछ बड़ा हुआ तो बंद कमरे में नारी के अंगो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के आकर्ष ने मेरी आँखों को कीला।

मेरा बचपन और मेरी प्रथम तरूणाई भी जिस गरीबी और जिन अभावों में बीती थी उसमें सौन्दर्याभिव्यक्ति विकसित होने के कोई अवसर ही न थे।

निर्धनता अभाव की मुक्त पीड़ा और धनागम पर क्षुब्ध बच्चन– हमारी सम्पन्नता भी तभी आनी थी जब श्यामा न रहो। उसने तो अपने दस वर्षों के वैवाहिक जीवन में इस घर की केवल गरीबी जानी थी। पैसा इस घर में आ रहा है– शायद और अधिक पर जितना रूपया आयेगा उतनी ही सारी कचोट अपने साथ लायेगा। पैसा अब कभी जीवन में मुझे खुश नहीं कर सकेगा।

श्यामा की मृत्यु पर धार्मिक कर्मकाण्डों के प्रति उपेक्षा, विद्रोहभाव मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं एक वस्त्र हो छूरी–लोटा ले तख्त पर चटाई डालकर बठू। पीपल के पेड़ पर घंट बाँधू। सुबह उठकर प्रेतात्मा को पीने के लिए उसम पानी डालूँ, रात को पीपल के नीचे दीपक जलाऊँ और वह सब खटराग करूँ जो नाई, ब्राहमण मुझसे करायें। इन सब बातों में मेरा बिल्कुल विश्वास नहीं। मैं लीक नहीं पीटना चाहता, मुझे तो सब पाखण्ड लगता है।

रचनाओं के जन्म की पृष्ठभूमि और बच्चन – बच्चन के जीवन का पूर्वार्द्ध विषम संत्रास का काल है। खेलने–खाने– आमोद–प्रमोद की उम्र में ढेर सारे अभाव – अनेक दुर्घटित नियति– देश बच्चन को वह बना देते हैं जो कदाचित वे बनना नहीं चाहते थे। बाल मित्र कर्कल की असमय मृत्यु, उसकी पत्नी विधवा चम्पा के साथ वासनात्मक राग, चम्पा का मूड़ मुड़ाकर विरक्त होना, श्यामा से विवाह और उसका अकाल काल कवलित होना आदि घटनाक्रम उनके मन को उद्दाम उच्छृंखल तो बनाते ही हैं अंतस् को विकट संत्रास से भी भर देते हैं। स्वयं बच्चन के शब्दों में–

किसी का तन मेरे लिए दीवार था किसी का मन मेरे लिए दीवार था। कहीं लोक–शील और लोक–मर्यादा ने मेरे जीवन की स्वाभाविक माँगों को अवरुद्ध – कुंठित विकृत किया तो कहीं लोकभय और लोकाचार ने। सतह पर और, तल में और बाहर और भीतर और तन में और मन में और शब्द में और भाव में और इतने दबाव, खिंचाव, तनाव – कसाव को सहते, जीते मुझे रोगाक्रान्त उद्घान्त मारबिड हो ही जाना था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यही नहीं अग्रवाल विद्यालय को सेवा में बिताए गये तीन वर्षों को विकट त्रासद कालखंड मानते हुए वे कहते हैं– ये तीन वर्ष जो मैंने अग्रवाल विद्यालय की सेवा में बिताए मेरे लिए कितने मानसिक तनाव, शारीरिक श्रम–संघर्ष, आर्थिक संकटों और अप्रत्याशित अवांछित और अप्रिय घटनाओं क वर्ष रहे हैं। पर इन्हीं वर्षों में मैंने मधुबाला और मधुकलश के गीत लिखे। वे सारे के सारे कट वस्तु – सत्य तो कालान्धकार में विलुप्त हो गये पर उनके बीच से मेरी पंक्तियाँ अब भी कौंध मारती हैं–

तुमने समझा मधुपान किया।

मैंने निज रक्त प्रदान किया।

उर क्रंदन करता था मेरा

पर मुख से मैंने गान किया।

ऊगिनि परीक्षा के क्षण अर बच्चन–

बच्चन का समूचा जीवन अग्निपथ है और इस तप्त माग पर चलना– ऐसे जीवन को जीना स्वयं में एक तपस्या है– कदम–कदम पर अग्नि परीक्षा देने की कठिन तपस्या बच्चन ने अपने जीवन में अनेक अग्नि परीक्षाएँ दी हैं– ''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' के श्रीमती यशपाल (प्रकाशवती पाल) को लेकर बडो कठिन स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। यह उन दिनो का प्रसंग है जब यशपाल जी से उनकी शादी नहीं हुई थी पर क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण प्रकाशवती जी लाहौर से भागकर पढ़ने के लिए इलाहाबाद आई थीं और बच्चन जी के परिवार के साथ रहती थीं । 'वह पगध्वनि मेरी पहचानी' वाली बच्चन जी की काव्य पंक्ति से वह सारा प्रसंग जुड़ा था। बच्चन जी को शिक्षा गुरू और यशपाल जी को दीक्षा गुरू मानने वाले प्रख्यात साहित्यकार कमलेश्वर ने उस विषम घटनाक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है 'बच्चन जी मेरे शिक्षा गुरू थे और यशपाल जी मेरे दीक्षा गुरू। प्रकाशवती जी फतेहगढ़ जेल में यशपात्र जी से शादी कर चुकी थीं। क्या भुलूँ क्या याद करूँ के प्रसंग ने तूल पकड़ लिया था। भाभी प्रकाशवती अदालत में मानहानि का मुकदमा दायर करने को तत्पर थी। बच्चन जी अपने सापेक्ष सत्य से डिगने को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तैयार नहीं थे। वैसे यशपाल जी बहुत बीतरागी थे पर मामला तूल पकड़ता जा रहा था। मेरी और डॉ० धर्मवीर भारती की हालत बहुत नाजुक थी, क्योंकि हमें बीच में पड़ना था मैं तो बहुत बड़े धर्म संकट में फँसा हुआ था। तब बच्चन जी ने मुझे उबार लिया था। कहा था– 'जो वे लिखना चाहें लिखें– तुम्हें छापना पड़े तो छाप दो और शायद वे धीरे से गुनगनाएं थे– 'अब न रहे वे पीने वाले अब न रही वह मधुशाला।

इसी तरह श्यामा की मृत्यु के बाद विरह का एकाकी संत्रास झेलते बच्चन ने स्वयं को एक और अग्निपरीक्षा की घड़ी में पाया था जिसमें तेजी से बदलते घटनाक्रम के कारण ही वे बच सके थे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में वह क्षण सचमुच कितना विकट था– 'आयरिश (एक लड़की) की प्रेमासक्ति में मैंने धर्म परिवर्तन कर इसाई होने का भी निर्णय ले लिया था।

मानव–मन की कमजोरियों को सहज स्वीकारते बच्चन– मधुशाला के पाठकों के लिए किंवा अपने मदिरा द्वेषी सात्विक आलोचकों के लिए बच्चन ने जो रूबाई लिखी थी उसमें उन्होंने स्वयं को मदिरा के स्पर्श तक से अछूता बताया था–

स्वयं नहीं पीता रों को, किंतु पिला देता हाला

स्वयं नहीं छुता औरों को पर पकड़ा दैता प्याला,

पर उपदेश कुशल बहुतेरे से मैंने यह सीखा ह,

स्वयं नहीं जाता औरों को, पहुँचा देता मधुशाला।

किंतु अपनी आत्मकथा में वे अपने मदिरा सेवन की बात को सहजस्वीकार करते हुए लिखते हैं– शराब का पहला स्वाद मैंने प्रकाश के आग्रह पर जाना था। जब एक बार शुरूआत हो गयी तो यदा–कदा मैं मित्रों के आग्रह पर एकाध पैग ले लेता था। मैं फौजी मेस में प्रायः प्रतिदिन थोड़ी बहुत शराब पीने लगा था। और इस पहले स्वाद की भूमिका निश्चित रूप से बहुत पहले बन चुकी थी। स्वयं उन्हीं के शब्दों में, जबलपुर में राम सुख लाल श्रीवास्तव और केशव प्रसाद पाठक ने शराब पिलाई थी। बरेली में प्रकाश जी के साथ। असंयत– अस्वाभाविकता की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बेबाक स्वीकृति के बीच बच्चन– 'कुंठाएँ सबसे अधिक दमित यौन भावनाओं से जन्म लेतीं हैं। मुझे अपने यौवनारंभ में जैसा संसर्ग मिला था उससे मुझे अपनी यौन भावनाओं को दमित करने को बाध्य न होना पड़ा था। अब मैं ऐसा समझता हूँ कि यौनाकर्षण को अवरूद्ध न किया जाना चाहिए पर लैंगिकाकर्षण को संयमित करना जरूरी है। फिर भी इन दोनों अवस्थाओं में मैंने अपने को सहज स्वाभाविक न पाया था।

अपनी कायस्थ बिरादरी से उपेक्षित क्षुब्ध विद्रोहरत बच्चन – कतिपय पारिवारिक व्यावहारिक विसंगतियों के कारण कायस्थ बिरादरी ने बच्चन के परिवार को उपेक्षित ही नहीं, जाति– बहिष्कृत भी कर दिया था। यहाँ तक कि श्यामा के मरने के बाद किसी शवयात्रा में भी नहीं गया। 'घर के केवल 4 लोग श्यामा की अर्थी को ले गये। तेजी के साथ विवाह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रवक्ता – पद की गरिमा से जुड़ने और बच्चों का बाप बनने के बाद बच्चन के प्रति उनकी बिरादरी सहमत नहीं हुई और उन्होंने अपनी इस बिरादरी को स्वयं ही त्याग दिया। 'ऐसी पिछड़ बुद्धि बिरादरी से मैं खुद कटना चाहता था। मेरी दृष्टि में बिरादरी की संस्था अपना जीवन खो चुकी थी।

हम जाति स बहिष्कृत। हमने सोचा चलो हम एक नव परिवार का प्रारंभ करें। कहते हुए 'बच्चन' ने अभिमान से अपनी पिछड़ बुद्धि बिरादरी से अलग नव–जाति परिवार की सर्जना की। 'अमित के स्कूल दाखिले के समय हमने बच्चन शब्द को अपने परिवार के नाम के रूप में स्वीकार किया और अमिताभ बच्चन करके उसे लिखाया गया।'

तेजी के साथ बच्चन

तेजी जी के साथ पुनर्विवाहित बच्चन जी जीवन के अभिनव आयाम से जुड़े और उन्होंने अपनी इस नव– पत्नी को पत्नी की स्थिति से ऊपर उठाकर अपनी पहचान का अंग बना लिया। बच्चन की आत्म स्वीकृति– 'मुझे तजी का संग चाहिए था पर तथाकथित पत्नी की स्थिति में नहीं.. पर मुझे तो समाज में रहना था और जाहिरा तौर पर उसी रूप में जिसमें उसके अंदर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संयुक्त नर–नारी रहते हैं। मानती है कि ये पंक्तियाँ इस ध्येय से लिखी जा रही हैं कि हमने परस्पर एक आंतरिक सम्बन्ध बना अथवा समझ रखा है और हमें जानने के लिए उसे जानना जरूरी है।

संकल्प के धनी बच्चन

बच्चन का स्वाभिमान अद्वितीय था। वे न झुकना जानते थे और न टूटना। हाँ लड़ना जरूर जानते थे, 'जब मैं लड़ाई छेड़ता हूँ तो चौतरफी छेड़ता हूँ' का उद्घोष करने वाले इस मनस्वी कवि ने जीवन की विषम स्थितियों में भी संघर्ष को ही चुना और दृढ़ आत्मिक धरातल से उपजे प्रतिज्ञा–संकल्पों ने उसे उपचार और विजय से जोड़ा। 'अमित की बीमारी में उस रात को मैंने प्रतिज्ञा की अगर अमित अच्छा हो जायेगा तो कभी शराब नहीं छुऊँगा। – अमित की बीमारी में मैंने माँस न खाने की प्रतिज्ञा की थी।' आदि प्रतिज्ञाएँ बच्चन की इसी अदम्य आत्मजिजीविषा का प्रमाण हैं। सामाजिक समझ व गंभीर स्वभाव के प्रतीक बच्चन– बच्चन को जीवन के प्रथम तिहाई में स्वतंत्रता भी मिली और संघर्ष भी खूब करना पड़ा, लेकिन जिस सामाजिक सम्मान से व्यक्ति स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करके परिपक्व बनता है, वह सम्मान उन्हें अपनी जाति से ही नहीं मिला । फलतः वे जाति के साथ–साथ समूचे हिन्दू समाज के प्रति विद्रोही हो उठे और 'हिन्दू समाज अपने यहाँ से निकालना ही जानता है।

अपने में सम्मिलित कर लेना, मिला लेना – आत्मसात् कर लेना नहीं कहकर उसका कच्चा चिट्ठा खोलने से नहीं चूके। लेकिन समय के साथ शीघ्र ही उन्हें यह बोध हो गया कि 'इतने बड़े संसार में अपने को अकेला अनुभव करने से बड़ा बंधन नहीं, और अपनी सामाजिक समझ का परिचय देते हुए स्वयं को समझौतावादी के रूप में स्थापित करके वे पूर्ण संतुष्टि के भाव से भी जुड़ गये और 'समाज में अपने को अपवाद बनाकर रखना या तो अस्वाभाविकता है या प्रदर्शन प्रियता। मेरे ऐसे सामान्य संतुष्ट व्यक्ति के लिए समाज से ऐसा सतही समझौता कर लेना ही रास आता है। कहकर अपने अंधकार को विश्व के अंधकार से सम्बद्ध कर दिया इसी तरह आत्मीय परिजनों के बीच आपका गंभीर स्वभाव भी आपके व्यक्तित्व को गरिमापूर्ण रहस्यमयता से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जोड़ता था। स्वयं आपके शब्दों में– ''मेरी गम्भीरता उनके लिए (संतराम पंडित तेजी जी के धर्म पिता) एक समस्या थी। मेरी अनुपस्थिति में वे तेजी या अपनो बेटियों से पूछा करते थे– बच्चन जी कभी हँसते नहीं।

असामान्य, अस्वाभाविक और अस्वस्थ सम्बन्धों को जीते बच्चन

बच्चन का अंतस् मुँहफट भी है और निर्भीक साहसी भी। इसीलिए वे जीवन की भुक्त कट सच्चाइयों को बिना किसी भय – संकोच के सहज स्वीकार सके हैं। लोक–दृष्टि में वे अच्छी हैं या बुरी इसकी ओर ध्यान दिये बगैर उन्होंने कर्कल से श्यामा तक पुरुष – स्त्री जो मेरे निकट आये, जिनसे मैं घनिष्ठ हुआ – किसी से मेरा सम्बन्ध सामान्य, स्वस्थ, स्वाभाविक, सहज प्रफुल्ल नहीं रहा। को सहज भाव से स्वीकारते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि 'जोवन को जानने का कोई सीधा रास्ता नहीं है। जीवन को जानना एक खोज है, उसे कुछ भूल–भटक कर ही जाना जा सकता है। बुली या दृढ़ आत्मबली बच्चन – बच्चन के बारे में अपने संस्मरण में प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रा नंदन पंत जी ने उन्हें बुली कहा है। जिसका अर्थ है– जबरा मारै रोवै न देय। स्वयं बच्चन ने भी स्वीकार किया है कि या मेरी इच्छा शक्ति बहुत प्रबल है, इसका सबूत मुझे एक से अधिक बार मिला है। अपनी प्रकृति के प्रतिकूल अपने से करा लेने में मैं अपने इच्छाबल की सफलता और विजय समझता था, और उनकी यह दृढ़ता उन्हें नैतिकता से जोड़ते हुए 'इस जिद या हठधर्मी इढ़ता से नैतिकता का एक पूरा सिस्टम या तंत्र उभरता है जिसके संकेत निशा निमंत्रण, एकान्त संगीत और आकुल अंतर में बराबर मिलेंगे।' की स्पष्ट घोषणा के साथ उन्हें इस अग्निपथ का पथी बना देते हैं जो टूटना – झुकना, थकना हारना जैसे नकारो से सर्वथा मुक्त विषम कंटकाकीर्ण जीवन–पथ पर न केवल अविरल गति से जुड़ा है, प्रमन प्रसन्नता से भी आप्त है।

वरन् इस तरह बच्चन के व्यक्तित्व और रचना – धर्मिता के मर्म को समझना भी एक कठिन शोध – यात्रा ही है। आपकी सम्पूर्ण रचनाधरर्मिता जीवन की विषम कतार में संघर्ष, अभाव और अतृप्ति के चक्रवाती तूफानों के बीच विकसित हुई है। भरपूर थकान के ऊपर बिना थका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आत्मबल, झुकाने और झुकाकर पूरी तरह मिटा देने को तत्पर जीवनानुभव, बच्चन जी की सृजन यात्रा को इन्द्रधनुषी मनोहारिता से जोड़ते हैं, लेकिन इन्द्रधनुष के विपरीत इस रचना यात्रा का पथ सीधा न होकर जटिल वक्र रेखीय है। आपने अपनी व्यक्ति की पीड़ा को समूह – समष्टि से जोड़कर देखा है और जो कुछ रचा है वह संत्रासों के मरुस्थल में तपते हुए रचा है। इसीलिए आपकी कविता में संकोच, रहस्यमयता, कृत्रिमता या आदर्शवादिता का अभाव है। साहसी बच्चन ने अपने निजी प्रेम – संवेग और व्याकुल्ता को बिना किसी लाग–लपेट या बनाव– श्रृंगार के सीधे तौर पर अपनी रचनाओं में इस प्रकार ढाला है कि वह उनकी व्यष्टि की भुक्त पीड़ा न होकर समष्टि–लोक की पीड़ा बन गयी है और इस सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि साधारणीकरण का यही धरातल कविता के साथ–साथ कवि को भी कालजयी– अमर बना देता है। बच्चन कवि न बनने की इच्छा के विरुद्ध कवि बने हैं। उनकी काव्य– कल्पना चाहे जितनी ललित–मधुर और ह्रदयहारी हो, भुक्त यथार्थ से उसकी निरन्तर सम्बदूधता असंदिग्ध है। 'मैं आपसे बार–बार कहता हूँ कि मेरी हर कल्पना का मूल किसी जिये – भोगे, झेले – सहे यथार्थ से है कवि की आत्म – स्वीकृति इसी तथ्य को प्रमाणित करते हुए उन्हीं के शब्दों में यह स्पष्ट करने से नहीं चूकती कि ''मैं कवि नहीं बनना चाहता था। कवि तो इसलिए बन गया कि मुझे स्वस्थ जीवन नहीं मिला।''

बच्चन जी की रचना धर्मिता का मर्म उनकी अतृप्ति, उनके अभाव और अशान्ति से भरे अंतस के अतल में उत्ताल तरंगों वाले एक ऐसे महाखार के उद्वेलन से जुड़ा है जिससे उपजा तूफान सतह पर रक्त रंजित ह्रदय का गान – कविता की मोहक मुस्कान साहित्य का रमणीय उद्यान बनता है। स्वय बच्चन के शब्दों में ''जिसे शान्त, चिन्ता – मुक्त घर नसीब नहीं हुआ, उसने मधुशाला बनाई थी, जिसे तन–मन की सहज संगिनी नहीं मित्री थी, उसने मधुबाला की कल्पना की थी, जिसे मनवांछित साथी नहीं सुलभ हुआ था, उसने साकी का हाथ थाम लिया था, जो एक निर्मल शीतल स्रोत से अपनी तृष्णा तृप्त नहीं कर पाया था वह हाला के प्याले पर प्याले चढ़ा रहा था।''

सतरंगिनी ने आग से राग के संसार में पदार्पण का बोध कराया तो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'मिलन यामिनी' ने राग के संसार को जीने–भोगने की अदम्य प्रेरणा दी''।

इस तरह स्पष्ट है कि बच्चन के व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व भी बहुआयामी है। कहानियों से अपनी रचना धर्मिता का प्रारम्भ करने वाल बच्चन जी की रचनावली के कुल नौ खण्ड हैं जिसमें पाँच खण्ड गद्य के हैं और चार खण्ड काव्य के हैं। 'चुन्नी मुन्नी' जैसी कहानियों और 'तेराहार' काव्य–संग्रह 1932 से साहित्य जगत में प्रवेश करने वाले मेधावी – अग्निपथी बच्चन जी की सम्पूर्ण रचनाएँ निम्नवत् हैं–

क. हालावादी रचनाएँ : मधुत्रयी

1. मधुशाला 1934
2. मधुबाला 1936
3. मधुकलश 1937 इसे कवि ने श्यामा की स्मृति में विश्व अश्वत्थ तरु से बाँध दिया था।

ख. श्यामा के अकाल मरण की वेदना के अवरोध जन्म अन्तरात्र के बाद तीन गीत संग्रह–

1. मेरी वेदना
2. मेरी निराशा
3. मेरा एकाकीपन

ग. वेदना जन्म अवरोध के बाद उपजा रचना – प्रवाह

1. निशा निमंत्रण 1938 (एकाकी मन की सघन पीड़ा का चित्र)
2. एकान्त संगीत 1939 (उदासी एवं निराशा का चरम, अकेलेपन एवं प्रश्नाकुल मन का विकट संत्रास)
3. आकुल अंतर 1943 (1940–42 में रचित गीतों का करुण संग्रह)

घ. निराशा का इन्द्रधनुषी आशा में परिवर्तन–

1. सतरंगिनी 1945 (स्वच्छ मन और निश्ठल हृदय की आलोकपूर्ण झलक)।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ड. राष्ट्रीय भावनाओं की अनुभूति के काव्य–

1. बंगाल का अकाल 1945 (बंगाल के अकाल्ल का हृदय विदारक दश्य–चित्र)
2. हलाहल 1946 (मृत्यु भय पर विजय की साधना)
3. खादी के फूल 1948
4. सूत की माला 1948

च. पुनर्विवाह जन्य प्रौढ़ प्रणय और तृप्त मिलन से उपजी रचनाएँ

1. मिलन यामिनी 1950
2. प्रणय पत्रिका 1955 (दोनों में क्रमशः संयोग और वियाग श्रृंगार सजीव अभिव्यक्ति)

छ. जीवन–जगत की गहन अभिनव अनूभूतियों के काव्य–

1. धार के इधर–उधर 1957
2. आरती और अंगारे 1958
3. बुद्ध का नाचघर 1958
4. विभंगिमा 1961
5. चार खेमे चौसठ खूँटे 1962
6. दो चट्टानें 1965 (1963–64 की रचनाएँ)
7. बहुत दिन बीते 1967
8. कटती प्रतिमाओं की आवाज 1968
9. उभरते प्रतिमानों के रूप 1969

ज. चरम – शिखर का परिपूर्ण काव्य– जाल समेटा 1973

झ. प्रारम्भिक गद्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1. चुन्नी – मुन्नी एवं अन्य कहानियाँ (सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित)
2. नये – पुराने झरोखे 1962 (निबंध संग्रह)
3. टूटी–फूटी कड़िया 1953

ज. आत्मकथा के यथार्थ बोध की गद्य रचनाएँ–

1. क्या भूलूँ क्या याद करूँ 1969
2. नीड का निर्माण फिर 1970
3. बसेरे से दूर 1977
4. दश द्वार से सोपान तक आत्मकथा के ये चारों खण्ड बच्चन जी के शब्दों में–

स्मृति – यात्रा – यज्ञ है जिसमें प्रकारान्तर से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का हिन्दी भाषा और साहित्य का पूरा संघर्ष ही मूर्त हो गया है।

ट. बाल–साहित्य

1. जन्म दिन की भेंट
2. नीली चिड़िया
3. बन्दर बाँट

ठ. अनूदित रचनाएँ

1. उमर खय्याम की रुबाइयाँ 1934
2. जनगीता 1958 (श्रीमदभगवद्गीता का अनुवाद)
3. मरकत द्वीप का स्वर (यीट्स की कविताओं का अनुवाद)
4. नेहरू का राजनीतिक जीवन चरित 1961
5. नागरगीता 1966

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

6. मैकबेथ 1957

7. ओथैलो 1969

8. किंगलीयर 1972

ड. समीक्षा शोध ग्रंथ–

1. डब्ल्यू० बी० ईट्स ऐंड अकाल्टिज्म (शोध–प्रबंध 1954)

2. कवियों में सौम्य संतः पंत काव्य समीक्षा 1960

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बच्चन का रचना–संसार न केवल विस्तृत वरन् बहुआयामी भी है। आपके कृतित्व ने हिन्दी साहित्य में न केवल आन्दोलनात्मक तूफानों की सर्जना की वरन् देवकी नंदन खत्री के बाद अपने मधुर आकर्षण से पाठकों को हिन्दी सीखने पर विवश कर दिया। आपको मधुत्रयी (मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश) की हालावादी रचनाएँ कलकत्ता से लाहौर तक एक ही उल्लास से पढ़ी–सुनी गयी। आत्मकथा के रूप में 'क्या भूल् क्या याद करूँ कृति ने साहित्य जगत् में जो हलचल मचाई उससे हिन्दी गौरवान्वित हुई है। आपकी दो चट्टानें कृति को 1964 म हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके महनीय कृतित्व के लिए 1966 में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार एवं एफ्रो एशियन राइटर्स कांफ्रेंस द्वारा लोट्स पुरस्कार प्राप्त हुए। यही नहीं 1991 में 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की कृति के लिए आपको भारतीय साहित्य के सबसे बड़े पुरस्कार सरस्वती सम्मान से नवाजा गया। भारत सरकार द्वारा दिया गया 'पद्मभूषण' सम्मान आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की महनीयता का स्तवन – अभिनंदन मात्र है।